श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल राजस्थान
का उद्‌बोधन

**भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा पश्चिमी क्षेत्र के
विश्वविद्यालयों के कुलपतियों सम्मेलन**

दिनांक 11 दिसम्बर, 2019 **समय प्रात : 10.30 बजे**

आई. आई. एस. मानद् विश्वविद्यालय,जयपुर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री भूषण पटवर्धन जी, भारतीय विश्वविद्यालय संघ के अध्यक्ष श्री एम एम सांलुखे जी, महासचिव डॉ. पंकज मित्तल जी, आई आई एस मानद् विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अशोक गुप्ता जी, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, आमंत्रित अतिथिगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओं और छायाकार मित्रों।

राजस्थान प्रदेश की राजधानी इस गुलाबी नगरी में पश्चिमी क्षेत्र राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र प्रांतों के करीब दो–सौ विश्वविद्यालयों के इस महाकुंभ में मुझे उपस्थित होने का अवसर मिला, यह मेरे लिये प्रसन्नता का विषय है। उच्च शिक्षा से जुड़े उच्च पदस्थ विद्वान इस दो दिवसीय संगोष्ठी में '' उच्च शिक्षा का वैश्विकरण एवं वैश्विक रैंकिंग '' विषय पर गहन चिंतन एवं विमर्श करें।

आज के दौर में देश की शिक्षा व्यवस्था एवं उसका स्तर सरकार, समाज एवं शिक्षाविदों के लिये चिंतन का विषय ही नहीं अपितु चिंता का विषय है। आप लोग इसे गंभीरता से लें। इस विषय पर निरन्तर चिंतन करते रहने की आवश्यकता है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक पहल के साथ ईमानदारी से प्रयत्न करें। सभी मिलजुल कर उच्च शिक्षा में नये कीर्तिमान स्थापित करें, जिससे आने वाले समय में वैश्विकरण की चर्चा में भारत को गौरवपूर्ण स्थान मिल सके तथा आने वाले वर्षो में हमारे विश्वविद्यालय व संस्थाएं भी विश्व के प्रथम सौ संस्थानो में दिखाई दें। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के द्वारा तैयार की जा रही नई शिक्षा नीति का फोकस शिक्षा संस्थानो के उत्कृष्टता पर है। यह सत्य है कि हमारे देश में प्रतिभाओं की कमीं नहीं है। हमारी प्रतिभाओं ने विश्व स्तर पर विज्ञान, तकनीकी, अर्थशास्त्र, साहित्य जैसे अनेक क्षेत्रों में नाम अर्जित किया है।

इस दिशा में ओर तेजी आनी चाहिये। आप लोगों को अपने – अपने विश्वविद्यालयों में ऐसे प्रयत्न करने होंगे कि प्रतिभाएं पलायन न करें। प्रतिभाओं की उपलब्धियों का लाभ राष्ट्र को प्राप्त हो, जिससे देश के विकास को गति मिल सके। देश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं में प्रतिभा की कमी नही है। यह विचारणीय प्रश्न है कि वैश्विक रैंकिंग में हम पिछड़ क्यों रहे हैं। इस दिशा में आप लोगों की भूमिका ही देश की प्रतिभाओं का मार्ग प्रशस्त करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके प्रयास, सरकार, समाज व शिक्षार्थियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। आप लोगों की जिम्मेदारी है कि ऐसे सम्मेलनों, परिचर्चाओं के माध्यम से ठोस सुझाव दें कि देश के उच्च शिक्षा क्षेत्र को कैसे मजबूत किया जाए। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार हो। शिक्षा की दिशा व दशा पर गंभीर चिंतन किया जाए। शिक्षा को बहुआयामी विस्तार दिया जाना चाहिए। अधिक से अधिक रोजगार उन्मुखी बनाया जाना चाहिए।

आप सभी विद्वान है। शैक्षणिक संस्थानों का संचालन कर रहें हैं। आपकी पहल एवं सोच ही उच्च शिक्षा को उस मुकाम तक पहुँचा सकती है, जहाँ पर देश के युवा अध्ययन एवं शोध के माध्यम से अपने ज्ञान में ही वृद्धि न करें अपितु राष्ट्र एवं विश्व को भी बहुत कुछ देने में सक्षम बन सके।

अच्छी शिक्षा अच्छे संस्कार के साथ प्रगति के अपार व विपुल अवसर प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि इस संगोष्ठी के निष्कर्षो से नई शिक्षा नीति के निर्धारण मे भी महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होगा। इस दो–दिवसीय संगोष्ठी में आप विभिन्न सत्रों में सार्थक चिंतन से निकलने वाला निष्कर्ष निश्चित रूप से शैक्षणिक प्रगति एवं विकास के लिये मील का पत्थर सिद्ध हो सकता है।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है।

संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोगों के संस्थानों में युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में उनको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को उनके आचरण में लाने के लिए प्रयास करें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्ड़ता व सामाजिक समरसता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा।

मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालयों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

शिक्षा का उद्देश्य, छात्रा को नौकरी या रोजगार के योग्य बना देने के साथ ही चरित्र–निर्माण भी अत्यन्त आवश्यक है। अच्छे चरित्र से ही समाज और देश को बदला जा सकता है। यहां छात्राओं को आज की विषम परिस्थितियों से लड़ने के लिए तैयार किया जाता है।

हमें उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता पर आधारित तकनीकी शिक्षा प्रणाली को विकसित करना होगा। हमारा लक्ष्य विश्व के बाज़ार के अनुरूप शिक्षा में व्यावहारिक तकनीकी बदलाव करना है ताकि भारतीय योग्य युवा वर्ग अपना विकास कर सकें तथा देश के विकास में योगदान दे सकें।

संगोष्ठी की सफलता के लिये मैं शुभकामनाएं देता हूं।,

धन्यवाद। जयहिन्द।